آستانہ حضرات مخدومین سادات چودہوں پیراں (علیہم الرحمۃ والرضوان) الہ آباد

۷۸۶/۹۲

نقش تحفۂ روحانی وحل المشکلات

مَعَ اسْمِ اللهِ الْمَلِكِ السَّلٰمِ

صـ م ح م د ـلی اللہ علیہ وسلم
صـ ح م د م ـلی اللہ علیہ وسلم
صـ م د م ح ـلی اللہ علیہ وسلم
صـ د م ح م ـلی اللہ علیہ وسلم

اس نقش کو دیکھنے والے کی
ہر مشکل حل ہوگی انشاءاللہ

सलातुल मीमिल्अरबईन 4
दुरूदे चहल मीम

पेशकश
बमौक़ा जमादीयुस्सानी
बफ़ैज़े रूह़ानी सय्यिदुना मोह़युद्दीन
व सय्यिदुना मोईनुद्दीन व ह़ज़रात
मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ رضي الله عنهم
मोह़म्मद अ़ज़ीज़ सुल्त़ान नाचीज़

बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम

सुबह़ान क ला इलाह इल्लल्लाहु सुल्त़ा न क या मन हुवल्लाहु ला इला ह इल्लाहु वल जमीलुल्अ़ज़ीमु स़ल्लि स़लातन कामिलतवँ व सल्लिम सलामवँ व बारिक ब र क तन दाइमतन अ़ला जमालि क व कमालि क व नूरिकल मह़ब्बति व जमालि माफ़िस्समावाति व माफ़िल अर्ज़ि व नूरि कमालि क व जमालि कद्दारैनिल मु त ख़ल्लिक़ि बिल ख़ुलुक़िल अ़ज़ीमि व कुल्त फ़ीहि व इन्न क ल अ़ला ख़ुलुक़िन अ़ज़ीमिवँ व इत़ाअ़ति क व कुल्त फ़ीहि व मँय्युति़इर्रसू ल फ़ क़द अत़ा अ़ल्ला ह व सि़राति़ हुब्बि क व कुल्त फ़ीहि कुलइन्कुन्तुम तुह़िब्बूनल्ला ह फ़त्तबिऊ़नी युह़बिबकुमुल्लाहु व सय्यिदिल मु त जम्मिली न वल मुअ़ज़्ज़िमी न व इन्आ़मि इत़ाअ़ति क व कुल्त फ़ीहि व मँय्युति़इल्ला ह व रसूलहू फ़ क़द फ़ा ज़ फ़ौज़न अ़ज़ीमवँ व सि़राति़कल मुस्तक़ीमि व मिन्नति क व इन्आ़मिकल लज़ी जअ़ल्त वालिदैहि अह़ सनल वालिदी न व आलहू अह़ सनल आलि व अस़्ह़ाबहू अह़ सनल अस़्ह़ाबि व उम्म तहू अह़ सनल उममि व हु व नूरुकल जमीलुल अ़ज़ीमु मोह़म्मदुर्रसू लुल्लाहि व अ़ला वालिदैहि व आलिही व अहलि बैतिही व अस़्ह़ाबिही बिकुल्लि शअनिन जदीदिन इला अ बदिल आबादि।

तर्जमा: अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है।

पाकी है तेरी नहीं कोई मअ़बूद सेवाए अल्लाह के बादशाहत है तेरी ऐ वह जो अल्लाह है नहीं कोई मअ़बूद सिवाए उसके जो सबसे ख़ूबसूरत बड़ाई वाला है भेज तू दुरूदे कामिल और दाइमी सलाम्ती और बरकत अपनी ख़ूबसूरती और अपने कमाल पर और अपने नूरे मोह़ब्बत पर, और आसमानो ज़मीन में जो कुछ है उस की ख़ूबसूरती पर, और तेरे नूरे कमाल पर, और तेरे दोनों जहान की उस ख़ूबसूरती पर जो महक रहे हैं बुलंद अख़्लाक़ के साथ और फ़रमाया तूने उनके बारे में“ बेशक आपﷺ सरापा बुलंद अख़्लाक़ वाले हैं” और तेरी फ़रमाँबर्दारी पर, और फ़रमाया तूने उनके बारे में “और जो पैरवी करे रसूल की तो यक़ीनन पैरवी की उसने अल्लाह की” और तेरी मोह़ब्बत के रास्ते पर और फ़रमाया तूने उनके बारे में“ऐ ह़बीब ﷺ आप फ़रमादें अगर तुम मोह़ब्बत करते हो अल्लाह से तो तुम पैरवी करो मेरी तो अल्लाह मोह़ब्बत करेगा तुमसे” और तमाम ख़ूबसूरत लोगों और अ़ज़्मत वालों के सरदार पर और तेरी इत़ाअ़त के इन्आ़म पर और फ़रमाया तूने उनके बारे में“ और जो अल्लाह और उसके रसूल की इत़ाअ़त करेगा तो यक़ीनन वह बड़ी काम्याबी पाएगा” और तेरे सरापा सीधे रास्ते पर और तेरे एह़सान पर और तेरे उस इन्आम पर कि बनाया तूने सब से अच्छा जिनके वालिदैन को तमाम वालिदैन में और उन की आल को तमाम आल में और उन के अस़्ह़ाब को तमाम अस़्ह़ाब में और उन की उम्मत को तमाम उम्मतों में और वह तेरी अ़ज़्मतो जमाल वाले नूर मोह़म्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं और आपﷺके वालिदैन पर और आप ﷺकी आल पर आप ﷺकी अहले बैत पर और आप ﷺके अस़्ह़ाब पर हर नई शान के साथ हमेश्गी त़ौर पर।

नोट: जो शख़्स़ इस दुरूदे को रोज़ाना ४०/७/३ बार अपना मअ़मूल बनाएगा उसे अल्लाह व रसूल की ख़ुश्नूदी ह़ासि़ल होगी, उसका चेहरा अ़ज़ीम नूरे ईमान से मुनव्वर होगा वह दुन्या व आख़िरत के अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ रहेगा उसकी हर दुआ़ क़बूल होगी इन्शाअल्लाहु तआ़ला